नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

सेना की थाली में स्थानीय खेतों की ताकत

रायसेन से आई यह खबर केवल एक सरकारी घोषणा नहीं, बल्कि भारत की कृषि और रक्षा व्यवस्था के बीच एक नई साझेदारी की शुरुआत है. रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा यह ऐलान कि अब सैन्य छावनियों में स्थानीय किसानों से सीधे जैविक सब्जियां और फल खरीदे जाएंगे, और सेना की कैंटीनों में ज्वार, बाजरा, रागी जैसे श्रीअन्न को अनिवार्य किया जाएगा,दरअसल 'आत्मनिर्भर भारत' के एक व्यावहारिक मॉडल की झलक है.

अब तक सैन्य छावनियों में खाद्य आपूर्ति का बड़ा हिस्सा लंबी सप्लाई चेन के जरिए आता रहा है, जिसमें ताजगी, गुणवत्ता और लागत,तीनों पर सवाल खड़े होते रहे हैं. ऐसे में स्थानीय स्तर पर सीधे किसानों से खरीद की यह पहल न केवल जवानों को ताजा और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराएगी, बल्कि सप्लाई चेन को छोटा और अधिक पारदर्शी भी बनाएगी. इससे भ्रष्टाचार और बिचौलियों की भूमिका भी सीमित होगी, जो लंबे समय से कृषि क्षेत्र की एक बड़ी समस्या रही है.

दूसरी ओर, यह निर्णय किसानों के लिए भी एक स्थिर और भरोसेमंद बाजार तैयार करता है. अक्सर किसान अपनी उपज के उचित दाम के लिए संघर्ष करते हैं, लेकिन यदि सेना जैसी बड़ी संस्था सीधे खरीद करेगी, तो यह एक 'गारंटीड डिमांड' का मॉडल बन सकता है. खासतौर पर मध्यप्रदेश जैसे कृषि प्रधान राज्य में, जहां छोटे और मध्यम किसान बड़ी संख्या में हैं, यह योजना आय बढ़ाने में निर्णायक साबित हो सकती है.

श्रीअन्न (मिलेट्स) को सेना के आहार में अनिवार्य करना भी एक दूरदर्शी कदम है. ज्वार, बाजरा और रागी जैसे अनाज न केवल पोषण से भरपूर हैं, बल्कि जलवायु के अनुकूल भी हैं. कम पानी में उगने वाले ये फसलें किसानों के लिए जोखिम कम करती हैं और पर्यावरण के लिहाज से भी टिकाऊ हैं. संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2023 को 'अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष' घोषित किए जाने के बाद भारत लगातार इनके प्रचार-प्रसार पर जोर दे रहा है, और अब सेना में इनका उपयोग इस अभियान को और गति देगा.

हालांकि, इस पहल के सफल क्रियान्वयन के लिए कुछ चुनौतियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. सबसे पहले, स्थानीय स्तर पर पर्याप्त मात्रा और गुणवत्ता सुनिश्चित करना होगा. सेना की जरूरतें बहुत बड़ी और नियमित होती हैं, ऐसे में किसानों को संगठित करना, उन्हें प्रशिक्षण देना और एक मजबूत लॉजिस्टिक सिस्टम तैयार करना आवश्यक होगा. इसके अलावा, जैविक उत्पादों की प्रमाणिकता और गुणवत्ता नियंत्रण भी एक अहम पहलू रहेगा.

रायसेन में आयोजित उन्नत कृषि महोत्सव इस दिशा में एक सकारात्मक संकेत है, जहां किसानों को आधुनिक तकनीक, ड्रोन और उन्नत पशुपालन की जानकारी दी जा रही है. यदि इस तरह के प्रयासों को जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो यह योजना केवल एक सरकारी घोषणा तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि एक व्यापक कृषि-सुधार आंदोलन का रूप ले सकती है. कुल मिलाकर यह पहल 'जय जवान, जय किसान' के नारे को वास्तविक अर्थों में साकार करने की दिशा में एक ठोस कदम है. जब देश की सुरक्षा और अन्नदाता एक-दूसरे के साथ सीधे जुड़ेंगे, तब न केवल अर्थव्यवस्था मजबूत होगी, बल्कि एक आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की नींव भी और मजबूत होगी.

14 अप्रैल जयंती पर विशेष

बाबा साहब अम्बेडकर की विरासत को संजोती भाजपा

सुरेन्द्र शर्मा
प्रदेश उपाध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी म.प्र.

भारत के इतिहास में ऐसे महान व्यक्तित्व हुए हैं जिन्होंने अपने विचारों, संघर्ष और कार्यों से समाज की दिशा बदल दी. डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर ऐसे ही महान पुरुष थे. वे न केवल भारतीय संविधान के निर्माता थे, बल्कि सामाजिक समानता, न्याय और मानव अधिकारों के प्रबल समर्थक भी थे. उनका जीवन संघर्ष, ज्ञान और परिवर्तन का अद्भुत उदाहरण है. बचपन से ही उन्हें भेदभाव का सामना करना पड़ा. कठिन परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने धैर्य रखा और जीवन की गति में प्रगति करते रहे. शिक्षा को उन्होंने जीवन श्रेष्ठ बनाने का माध्यम माना उन्होंने यह स्पष्ट रूप से कहा कि शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो. यह उनका प्रसिद्ध नारा था, जिसने लाखों लोगों को प्रेरित किया. उनका मानना था कि सामाजिक बदलाव के लिए शिक्षा सबसे जरूरी है. स्वतंत्र भारत के निर्माण में डॉ. अंबेडकर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही. उन्हें संविधान सभा की प्रारूप समिति का अध्यक्ष बनाया गया. उनके नेतृत्व में भारत का संविधान तैयार हुआ, जो समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांतों पर आधारित है.

भारतीय संविधान में उन्होंने सभी नागरिकों को समान अधिकार दिए और छुआछूत जैसी कुप्रथा को समाप्त करने के लिए कानूनी प्रावधान किए. वे भारत के पहले कानून मंत्री भी बने. उनके प्रयासों से महिलाओं और कमजोर वर्गों को भी अधिकार मिले. डॉ. अंबेडकर ने संविधान में समानता को विशेष महत्व दिया. उन्होंने सुनिश्चित किया कि सभी नागरिकों को कानून के समक्ष समान अधिकार प्राप्त हों. उनके प्रयासों से संविधान में मौलिक अधिकारों को शामिल किया गया, विशेष रूप से उन्होंने अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए अनुच्छेद 17 का प्रावधान किया, जो एक ऐतिहासिक कदम था.

डॉ. अंबेडकर सामाजिक न्याय के प्रबल समर्थक थे. उन्होंने अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था का समर्थन किया, ताकि उन्हें शिक्षा, रोजगार और राजनीति में समान अवसर मिल सके. यह उनके सामाजिक सुधार के दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण हिस्सा था. उन्होंने भारत को एक संघीय ढांचे के साथ संसदीय लोकतंत्र देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों का संतुलन बनाए रखने के लिए उन्होंने स्पष्ट प्रावधान किए. उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि भारत में जनता द्वारा चुनी गई सरकार हो, और शासन जनता के प्रति उत्तरदायी रहे. डॉ. अंबेडकर ने न्यायपालिका की स्वतंत्रता पर विशेष जोर दिया. उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों को स्वतंत्र और निष्पक्ष बनाया, ताकि नागरिकों के अधिकारों की रक्षा हो सके.उन्होंने महिलाओं के अधिकारों को भी संविधान में स्थान दिलाया. समानता, संपत्ति के अधिकार और सामाजिक सुरक्षा जैसे मुद्दों पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया. वे महिलाओं के सशक्तिकरण के समर्थक थे. उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि सभी धर्मों को समान सम्मान मिले और किसी भी नागरिक के साथ धर्म के आधार पर भेदभाव न हो.

उनकी दूरदृष्टि के कारण भारतीय संविधान में लचीलापन और कठोरता दोनों का संतुलन रखा गया. उन्होंने संविधान को ऐसा बनाया जो समय के साथ बदलती परिस्थितियों के अनुसार संशोधित किया जा सके. डॉ. भीमराव अंबेडकर का योगदान केवल एक विधिवेत्ता के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक सुधारक और राष्ट्रनिर्माता के रूप में भी था. उन्होंने संविधान के माध्यम से एक ऐसे भारत की नींव रखी, जहाँ समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के आदर्श स्थापित हों.

> महिलाओं के लिए जननी एक्प्रेस,जननी सुरक्षा योजना ,गांव की बेटी योजना,प्रतिभा किरण योजना,लाडली लक्ष्मी योजना ,लाडली बहिना योजना, और अब लखपति दीदी जैसी योजना जो महिलाओं का आर्थिक स्तर ऊंचा कर उन्हें समाज में बराबरी का स्थान दिला रही हैं..महिला समानता का इससे श्रेष्ठ उदाहरण इससे पूर्व कभी देखा नहीं गया यह बाबा साहब के सपनों को पूरा करने का संकल्प ही तो है.. 2024 में तीसरी बार प्रधानमंत्री की शपथ लेने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने बाबा साहब अम्बेडकर की जयंती को देश भर में 'समानता दिवस' के रूप में मनाने एवं इस दिन सार्वजनिक अवकाश की घोषणा भी जिसे 2025 के 14 अप्रैल से लागू किया गया..नरेंद्र मोदी जी की सरकार बाबा साहब अंबेडकर की विरासत को केवल स्मारकों तक सीमित नहीं रख रही, बल्कि उसे नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास कर रही है. 'सबके साथ सबका विकास और सबका प्रयास' के मूल मंत्र के साथ सामाजिक न्याय, समान अवसर और सशक्तिकरण की दिशा में उठाए गए ये कदम बाबा साहब अंबेडकर के सपनों के भारत की ओर एक महत्वपूर्ण पहल हैं.

बाबा साहेब का विचार

मोदी का नेतृत्व और विकसित भारत का संकल्प

लाल सिंह आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अनुसूचित जाति मोर्चा

संविधान शिल्पी भारत रत्न श्रद्धेय बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की 136 वीं जयंती केवल एक ऐतिहासिक तिथि नहीं, बल्कि भारत की आत्मा का उत्सव है. यह वह दिन है, जब हम उस महापुरुष को स्मरण करते हैं, जिन्होंने सदियों की सामाजिक विषमता को चुनौती दी और एक ऐसे भारत की नींव रखी, जहाँ न्याय, समानता और गरिमा प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार हो. बाबा साहेब का जीवन संघर्ष, ज्ञान और संकल्प का अद्वितीय उदाहरण है—एक ऐसा जीवन, जिसने विपरीत परिस्थितियों में भी शिक्षा और आत्मसम्मान की मशाल को कभी बुझने नहीं दिया.

डॉ. अंबेडकर का व्यक्तित्व बहुआयामी था. वे केवल संविधान निर्माता ही नहीं, बल्कि एक बड़े अर्थशास्त्री, श्रेष्ठ विधिवेत्ता, महान समाज सुधारक और दूरदर्शी राष्ट्रनिर्माता थे. उन्होंने यह स्पष्ट रूप से समझा था कि यदि भारत को एक सशक्त राष्ट्र बनाना है, तो केवल राजनीतिक स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं होगी; इसके साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक न्याय भी सुनिश्चित करना होगा. यही कारण है कि उन्होंने संविधान में ऐसे प्रावधानों को शामिल किया, जो समाज के अंतिम व्यक्ति को भी समान अवसर और अधिकार प्रदान करते हैं. उनकी दूरदर्शिता का एक और महत्वपूर्ण पहलू था—मजबूत संस्थाओं का निर्माण. बाबा साहेब का मानना था कि किसी भी राष्ट्र की स्थिरता और प्रगति उसकी संस्थागत संरचना पर निर्भर करती है. वित्त आयोग, भारतीय रिजर्व बैंक, रोजगार कार्यालयों और श्रम नीतियों की जो बुनियाद उन्होंने रखी, वह आज भी भारत की आर्थिक व्यवस्था को मजबूती प्रदान कर रही है. उनकी सोच केवल वर्तमान तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक मजबूत आधार तैयार किया.

इतना ही नहीं, बहुत कम लोग जानते हैं कि डॉ. अंबेडकर की डॉक्टरेट थीसिस ने भारत में वित्त आयोग की स्थापना की नींव रखी और उनके विचारों ने 1934 के आरबीआई अधिनियम के निर्माण को दिशा दी. उन्होंने राष्ट्रीय विद्युत ग्रिड, दामोदर घाटी परियोजना, हीराकुंड बांध और सोन नदी परियोजना जैसे बड़े बुनियादी ढांचों के विकास को प्राथमिकता दी, यह योजनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि वे केवल सामाजिक

न्याय के ही नहीं, बल्कि आर्थिक विकास और राष्ट्र निर्माण के भी अग्रदूत थे. आज जब भारत बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में तेजी से प्रगति कर रहा है, तब यह स्पष्ट होता है कि हम उसी मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं, जिसकी दिशा बाबा साहेब ने दशकों पहले तय की थी. बाबा साहेब का सबसे बड़ा सपना था—एक ऐसा भारत जहाँ कोई भी व्यक्ति जाति, वर्ग, लिंग या जन्म के आधार पर भेदभाव का शिकार न हो.

उन्होंने सामाजिक न्याय को केवल एक नारा नहीं, बल्कि शासन और समाज का मूल सिद्धांत बनाने का प्रयास किया. उनका मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता तभी सार्थक है, जब सामाजिक और आर्थिक समानता भी सुनिश्चित हो. बाबा साहेब का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने समाज के वंचित, शोषित और पिछड़े वर्गों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया. उनका संघर्ष केवल अधिकारों के लिए नहीं था, बल्कि आत्मसम्मान के लिए था. उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा माध्यम माना और दलितों तथा वंचितों को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया. उनका यह विश्वास था कि जब तक व्यक्ति शिक्षित नहीं होगा, तब तक वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं हो सकता. आज जब हम वर्तमान भारत की ओर देखते हैं, तो पाते हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश उसी दिशा में आगे बढ़ रहा है, जिसकी परिकल्पना बाबा साहेब ने की थी. सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास केवल एक नारा नहीं, बल्कि शासन की कार्यप्रणाली का आधार बन चुका है. अंत्योदय की भावना के साथ सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे.

मोदी सरकार ने आर्थिक समावेशन के क्षेत्र में जो ऐतिहासिक कार्य किए हैं, वे बाबा साहेब के आर्थिक चिंतन का जीवंत उदाहरण हैं. जनधन योजना के माध्यम से करोड़ों लोगों के बैंक खाते खोले गए, आधार और मोबाइल के साथ जोड़कर उन्हें सीधे लाभ पहुँचाया गया. डिजिटल भुगतान प्रणाली, यूपीआई और भीम ऐप ने आम नागरिक को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है और शोषण और भ्रष्टाचार से बचाया है. यह सब उस सोच का विस्तार है, जिसमें बाबा साहेब आर्थिक सशक्तिकरण को सामाजिक मुक्ति का आधार मानते थे. इसके साथ ही, आधारभूत संरचना के क्षेत्र में जो व्यापक परिवर्तन हुए हैं, वे भी उल्लेखनीय हैं. प्रधानमंत्री गति शक्ति, भारतमाला, सागरमाला और राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति जैसी योजनाएं देश को नई गति प्रदान कर रही हैं.

भारत-अमेरिकी संबंधों में प्रगति के प्रयास

पाकिस्तान में अमेरिका व ईरान के बीच शांति वार्ता जारी रहते भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने 3 दिनों की अमेरिका यात्रा पूरी की. टैरिफ की ऊंची दरों से व्याप्त तनाव को सुलझाने तथा द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति की दिशा में इस यात्रा का महत्व है. मिसरी की अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो से भेंट के बाद अगले माह रुबियो की भारत यात्रा की संभावना बनी है. इसमें भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया व जापान के संगठन 'क्वाड' को मजबूत करने पर बल दिया जाएगा. मिसरी से चर्चा के बाद ऐसा लगा कि अमेरिका भारत से संबंधों को बेहतर बनाने का इच्छुक है. इस वार्ता में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर भी उपस्थित थे. इस चर्चा में एच-1 बी वीजा आवेदन पर महंगी फीस का मुद्दा भी उठा. अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने ट्रंप प्रशासन द्वारा लागू ऊंची टैरिफ दरों को रद्द कर दिया है. ट्रंप को लगे इस झटके के बाद से भारत-अमेरिका व्यापार समझौते पर बातचीत रुकी हुई है. रुबियो-मिसरी चर्चा के बाद शीघ्र ही व्यापार समझौते पर फिर चर्चा हो सकती है. व्यापार समझौते में यह सावधानी रखनी होगी कि अमेरिका कृषि, डेयरी व फार्मा प्रोडक्ट भारत में न खपाए. ऐसा कदम नहीं उठना चाहिए जो हमारे किसानों के हितों को विपरीत रूप से प्रभावित करे. मिसरी और रुबियो की यह भेंट बहुत सही समय पर हुई है. अमेरिका-ईरान युद्ध को लेकर ट्रंप भारत के रुख से अवगत हैं. संघर्ष जारी रहते ट्रंप ने प्रधानमंत्री मोदी से फोन पर बात भी की थी. रुबियो से बातचीत के समय मिसरी ने भी उन्हें भारत सरकार के दृष्टिकोण की जानकारी दी होगी. अमेरिकी विदेश मंत्री की भारत यात्रा के दौरान व्यापार समझौते सहित सभी बकाया मुद्दों पर चर्चा हो जाएगी तथा तमाम संदेहों का निराकरण होगा. कूटनीतिक संबंधों को बेहतर बनाकर भारत-अमेरिकी मित्रता सुदृढ़ बनाना दोनों पक्षों के लिए हितकर होगा.

ट्रंप के प्रथम कार्यकाल में भारत-अमेरिका के रिश्तों में काफी निकटता देखी गई थी लेकिन वर्तमान कार्यकाल के दौरान वह बात नहीं रही.नमस्ते ट्रंप और हाउडी मोदी जैसी बातें अब इतिहास बन गईं.

निशानेबाज

कड़े मुकाबले की ममता ने ठानी बोल मेरी मछली कितना पानी

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, बंगाल विधानसभा चुनाव में मछली अहम मुद्दा बन गई है. मुख्यमंत्री व टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी ने कहा कि बीजेपी यह तय करना चाहती है कि किस प्रदेश के लोग क्या खाएंगे-पिएंगे. प्रधानमंत्री मोदी बता रहे हैं कि मछली का उत्पादन कैसे बढ़ाया जाए जबकि उनकी पार्टी के बयान यह बताते रहे हैं कि वह लोगों के मांस-मछली खाने के खिलाफ हैं.' हमने कहा, 'बीजेपी के सामान्य नेता क्या कहते हैं, इससे मतलब नहीं. वही होता है जो मंजूर-ए-मोदी होता है. पीएम ने कहा कि बंगाल में मछली का उत्पादन कम हो गया है. अगर बीजेपी की सरकार आई तो विशेष योजनाएं शुरू कर मछली उत्पादन बढ़ाया जाएगा.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, मछली समुद्र तट के राज्यों का प्रमुख खाद्य है. मछली पकड़ने के लिए मछुआरे अपनी नौकाओं से समुद्र में दूर-दूर तक जाते हैं. कुछ लोग नदी किनारे बैठकर पानी में बन्सी डालकर देर तक प्रतीक्षा करते हैं कि चारे के लालच में कोई मछली फंस जाएगी. चुनाव

लड़ने वाले नेताओं के लिए भी सारे मतदाता मछली के समान होते हैं जिन्हें लुभावने वादों व खैराती योजनाओं का चारा डालकर फंसाया जाता है. कोई मछली खुद ही फंसना चाहती है. बुद्धिनाथ मिश्र की कविता है- एक बार और जाल फेंक रे मछेरे, क्या जाने किस मछली में फंसने की आस हो! लोग घर में फिश पॉन्ड रखकर रंगबिरंगी लाल-सुनहरी मछली पालते हैं. इसे लकी माना जाता है. उसके लिए विशेष फूड डालना पड़ता है.'

हमने कहा, 'मछली का महत्व कम नहीं है. पुराणों में उल्लेख है कि भगवान विष्णु ने मत्स्यावतार लिया था. महाराज मनु जब नदी में स्नान कर रहे थे तो उनकी अंजुली में एक मछली आ गई. उसे उन्होंने छोटे से जलाशय में डाल दिया. उसका आकार तेजी से बढ़ता गया तो उसे पहले तालाब और फिर समुद्र में डालना पड़ा. जब प्रलय हुआ और धरती डूब गई तो यही मछली मनु की बहुत बड़ी नौका को हिमालय तक खींचकर ले गई. यही कहानी बाइबिल में 'नोआर्ज आर्क' के नाम से है. उस विशाल मछली ने पृथ्वी के सभी जीवों की रक्षा की थी. बच्चे भी नर्सरी राइम गाते हैं- मछली जल की रानी है, जीवन इसका पानी है, हाथ लगाओ डर जाएगी, बाहर निकालो मर जाएगी.'

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12228 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	■	5		6
7				■		■	
8		■	■	9		10	
11			12		■	13	
■	■	■	14				■
15		16			■	17	18
	■	19		■	20		
21		■	22			■	

बाएं से दाएं
1. पलकें झपकाना 5. घड़ा, मंदिर आदि का कलश (सं.) 7. बहुत ही दबक कर धीरे से बोलना 8. हिमालय पर्वत का एक जंगली बैल जिसकी पूंछ का चंवर बनता है 9. वे पुस्तक ग्रंथ समाचार-पत्र आदि जो प्रकाशित किए जाएं, प्रकाशित करने का काम 11. सांख्यदर्शन का वह सिद्धांत जो आत्मा को अनेक मानता है (सं.) 13. मृत्यु के देवता 14. डाटना, घुड़कना 15. कृत्रिम, बनावटी, जो स्वाभाविक न हो 17. कपोल 19. रोटी सेंकने का लोहे का गोल छिछला बर्तन 20. भांति, प्रकार (उर्दू) 21. कामदेव की पत्नी 22. दाह,

ऊपर से नीचे
1. बकरी या भेड़ का बोलना 2. दरकना, चिटकना, नाराज होना 3. कौआ, अति धृष्ट, नीच व्यक्ति 4. माता का पिता, विविध 5. किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द, उपवास 6. ओस (उर्दू) 9. प्रकाश करने वाला, छोटा दीया, स्पष्ट करने वाला (सं) 10. सोने का स्थान या गृह 12. तर्क-वितर्क, बहस (सं.) 15. होंठ, अंतरिक्ष 16. उबाल कर पकाया हुआ चावल 18. हिलोर, तरंग 20. शरीर, देह

Solution 12227

नि	र्भ	र	■	खो	■	स	द्य
या	■	ह	ल	फ	ना	मा	■
म	हा	न	ता	■	स	न	द
त	र	स	■	म	म	ता	■
■	ना	ह	र	■	झ	■	बी
द	■	न	ग	र	■	अ	मा
वा	यु	■	■	मी	ना	का	री
त	वा	य	फ	■	क	ल	■

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी. पद का लाभ प्राप्त होगा. व्यवसायिक मामलों में स्थिति सामान्य रहेगी. धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. वर्ष के अन्त में शत्रु कष्ट होगा, चिन्ता रहेगी, किन्तु निवारण भी होगा. व्यर्थ के वाद विवाद एवं व्यय से बचने का प्रयास करें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पद का लाभ प्राप्त होगा. सामाजिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शत्रु कष्ट होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को मांगलिक कार्यों में खर्च होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को उन्नति के योग है. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को यश और सम्मान में वृद्धि होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों के लिये यश और पुरूषार्थ बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सौभाग्यशाली, भाग्यवर्धक, सुन्दर, तथा श्शांतिप्रिय होगा, आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी, जन्म स्थान के पास अपना भाग्योदय करेगा, पिता के प्रति आस्था रहेगी, पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा.

मेष- कानूनी मामले पक्ष में हल होंगे, रोजगार के अवसर की तलाश पूरी होगी, शारीरिक अस्वस्थ्यता के कारण व्यवधान आ सकता है.

वृषभ- सामाजिक कार्यों में भागीदारी बढ़ेगी, मांगलिक यात्रा का प्रोग्राम बनेगा, यश मिलेगा. मित्रों से विवाद होगा, कामकाज पूरा होगा.

मिथुन- नये प्रस्ताव मिलने के आसार हैं, भावनात्मक संबंधों में निकटता बढ़ेगी, पारिवारिक जीवन में सुख शांति रहेगी, मान सम्मान प्राप्त होगा.

कर्क- न्यायालयीन प्रयासों में सफलता मिलेगी, नवीन योजनाओं का विकास होगा, श्रम उतना ही करें, जितना आपका शरीर साथ दे.

सिंह- बुजुर्गों का ध्यान रखें, शासन सत्ता एवं उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा, मित्र वर्ग मदद करेंगे, आशा से अधिक लाभ प्रसन्नता देगा.

कन्या- साहसिक प्रयत्न से शत्रुओं पर विजय मिलेगी, नौकरी में यश एवं कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त होगा, परिश्रम का लाभ प्राप्त होगा.

तुला- कारोबारी विस्तार की संभावना है, दानधर्म में खर्च होगा, नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करें, साहस पराक्रम बना रहेगा.

वृश्चिक- बिना मांगे राय न दें, अपमान हो सकता है, नई योजना हाथ में आने के आसार हैं, भूमि भवन, मकान आदि संबंधित विवादों का समाधान होगा.

धनु- उच्च अध्ययन पर अंतिम निर्णय होगा, यात्रा सुखद रहेगी, मित्र मदद करेंगे, पारिवारिक जीवन में सुख शांति रहेगी, राजनैतिक प्रभाव में वृद्धि होगी.

मकर- मौजमस्ती में समय व्यतीत होगा, तीखी बातों से बचें, सोच समझकर पूँजी निवेश करें, आजीविका के प्रयासों में सफलता मिलेगी, संतान के कार्य बनेंगे.

कुम्भ- संवाद बनाये रखें, रिश्ते मजबत होंगे, मित्रों के सहयोग से कार्य प्रारंभ किया जा सकता है, जमीन जायजाद मिलने का योग है, मांगलिक कार्यों में खर्च होगा.

मीन- भावुकता में लिये गये फैसले बदलने पड़ सकते हैं, अधिकारियों का सहयोग तरक्की में सहायक रहेगा, विवादों को टालना हितकर रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

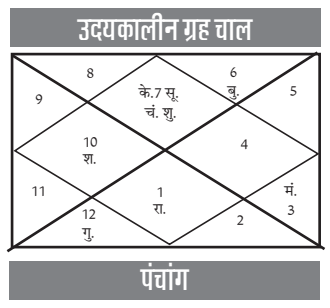

पंचांग

रा.मि. 24 संवत् 2083 वैशाख कृष्ण द्वादशी भौमवासरे रात 9/6, शतभिषा नक्षत्रे दिन 1/9, शुक्ल योगे दिन 1/2, कौलव करणे सू.उ. 5/43, सू.अ. 6/17, चन्द्रचार कुम्भ, शु.रा. 11, 1, 2, 5, 6, 8 अ.रा. 12, 3, 4, 7, 9, 10 शुभांक- 4, 6, 0.

व्यापार भविष्य

वैशाख कृष्ण द्वादशी को शतभिषा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड, चांदी के भाव में तेजी के रियेक्शन रहेंगे, पीले रंग की वस्तुओं में तेजी होगी. हल्दी, गुड़, सोना, में तेजी होगी. भाग्यांक 2585 है.

SUDOKU 7360

			2				3	
		9		8		2	6	4
1				3	6		9	
4		3						
	8			2			1	
						8		6
	4		7	5				3
3	7	5		4		1		
	2				8			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7359

4	6	2	3	5	8	9	1	7
8	1	7	9	2	6	3	5	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
6	4	1	5	3	7	2	8	9
2	7	5	8	4	9	6	3	1
9	3	8	2	6	1	4	7	5
1	2	3	6	9	5	7	4	8
5	9	4	7	8	2	1	6	3
7	8	6	4	1	3	5	9	2